JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सरकारी एवं गैर-सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन

*वर्षा रानी गुप्ता, शोधार्थी, व्याख्याता, शास. उ. मा. विद्यालय गुजरा, रायपुर, छत्तीसगढ़।

**डॉ.सोनिया पोपली, शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक, सेंट थॉमस महाविद्यालय भिलाई, छत्तीसगढ़।

सारांश-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सरकारी एवं गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इसके लिए न्यायदर्श के रूप में सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के २००-२०० शिक्षकों का चयन किया गया। शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता के मापन के लिए सिंह एवं भार्गव (१९९१) द्वारा विकसित तथा मानकीकृत संवेगात्मक परिपक्वता मापनी का उपयोग किया। शोध पत्र में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु t - परीक्षण का उपयोग किया गया है। अध्ययन से प्राप्त परिणाम से यह ज्ञात होता है कि सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों से उच्च स्तर की होती है।

प्रमुख बिन्दु-

संवेगात्मक परिपक्वता, उच्च्तर माध्यमिक विद्यालय एवं शिक्षक।

प्रस्तावना-

शिक्षा वह साधन है जो व्यक्ति के आंतरिक गुणों को प्रखर करती है एवं अंतर्निहित शक्तियों का विकास करती है। शिक्षक बालकों की छिपी हुई योग्यता और क्षमताओं का पता लगाकर उनका विकास करने तथा उन्हें अच्छा नागरिक बनाने में मार्गदर्शन प्रदान करता है। परिपक्व शिक्षकों में सामाजिक मूल्य अधिक होते हैं, जिससे वे अधिक प्रभावशाली होते हैं। संवेगात्मक दृष्टि से परिपक्व व्यक्ति अपने परिवार, व्यवसाय तथा समाज एवं अन्य व्यक्तियों से व्यवहार में संतुलन और अनुकूलन का परिचय देता है। सामाजिक जीव होने के कारण शिक्षा - संस्कार, जीवन मूल्य सब समाज से ही प्राप्त करता है। संवेगात्मक रूप से प्रौढ़ व्यक्ति में प्रेम, सहानुभूति, तनाव का अभाव, ऊंचे जीवन मूल्य तथा आधुनिक विचारों के साथ सामंजस्य की क्षमता आदि के साथ परिपक्व एवं गंभीर होता है। जो उसके जीवन में आने वाले वैचारिक द्वंद का सामना करने योग्य एवं वर्तमान परिस्थिति को स्वीकार करने योग्य बनाती है।

अध्ययन का औचित्य-

शोध अध्ययन द्वारा यह जानना आवश्यक है कि एक शिक्षक जो कि संतुलित व्यक्तित्व का घोतक है, परंतु वर्तमान परिस्थित बहुआयामी कार्यशैली की है, इस कारण उसकी संवेगात्मक परिपक्वता किस हद तक कारगर होती है, जिससे वह बिना किसी तनाव के नवीन विचारधारा के साथ अपना सामंजस्य बना सके और अपने शिक्षण कौशल को समयानुरूप परिवर्तित कर सकें। इसलिए शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययनआवश्यक है।

अध्ययन का उद्देश्य-

- सरकारी एवं गैर-सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना-

- सरकारी एवं गैर-सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

अध्ययन का परिसीमन-

छत्तीसगढ़ बोर्ड से संबंधित रायपुर जिले के शासकीय एवं गैर शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के महिला एवं पुरुष शिक्षक।

चर -

संवेगात्मक परिपक्वता

विधि-

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यायदर्श-

प्रस्तुत शोध के लिए न्यायदर्श का चयन छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले में स्थित विभिन्न शासकीय एवं गैर शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया। न्यायदर्श के चयन को निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक १ : न्यायदर्श का योजनाबद्ध आरेख

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय				कुल संख्या
सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय		गैर-सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय		
पुरुष शिक्षक	महिला शिक्षक	पुरुष शिक्षक	महिला शिक्षक	
१००	१००	१००	१००	४००

शोध उपकरण-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में संवेगात्मक परिपक्वता के मापन हेतु शोधकर्ता ने सिंह एवं भार्गव (१९९१) द्वारा विकसित तथा मानकीकृत संवेगात्मक परिपक्वता मापनी का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकी तकनीक -

t- परीक्षण का उपयोग किया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण -

सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना , इस उद्देश्य से संबंधित आंकड़ों के विश्लेषण के लिए t-परीक्षण का उपयोग किया गया। इस विश्लेषण के परिणाम तालिका क्रमांक २ में दिए गए हैं।

तालिका क्रमांक २ : Mean, Standard Deviation, Standard Error and 't'-value for Emotional Maturity

Types of School	N	M	S.D	S.E	df	't'-value	Level of significance
Government School	२००	१०५. ९५	१९.१०	१.३५	३९८	३.१५७	.००२
Non-Government School	२००	१००.४६	१५.३५	१.०८			

उक्त तालिका दर्शाती है कि सरकारी एवं गैर-सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों के संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य 't'-value ३.१५७ पाया गया, जो df = ३९८ पर ०.०१ स्तर पर सार्थक है। इससे यह ज्ञात होता है कि सरकारी एवं गैर-सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों के संवेगात्मक परिपक्वता का स्तर भिन्न – भिन्न है, अतः यह शून्य परिकल्पना की 'सरकारी एवं गैर-सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों के संवेगात्मक परिपक्वता के स्तर में सार्थक अंतर नहीं होगा.' को अस्वीकृत किया जाता है।

सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान १०५.९५ पाया गया जबकि गैर-सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान १००.४६ पाया गया। इससे स्पष्ट है कि सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता का स्तर गैर-सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता के स्तर से उच्च है।

शोध निष्कर्ष-

- सरकारी उच्चतर माध्यमिक शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता गैर-सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों के संवेगात्मक परिपक्वता की तुलना में उच्च स्तर की है।

विवेचना-

क्योंकि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्य करने वाले शिक्षक अध्यापन के अलावा प्रशासनिक एवं गैर शैक्षणिक कार्य भी करते हैं। इस प्रकार उनकी प्रवृत्ति बहुआयामी कार्यशैली की हो जाती है। बहु आयामी कार्यशैली से उनकी सामंजस्य क्षमता भी बढ़ जाती है, जो उन्हें संवेगात्मक रूप से परिपक्व बनने में मदद करती है।

शोध का शैक्षिक निहितार्थ-

प्रस्तुत शोध अध्ययन शिक्षकों की अपनी संवेगात्मक परिपक्वता के सही संचालन हेतु मार्ग प्रशस्त करेगी, ताकि किसी की परिस्थिति में बच्चों के शिक्षण कार्य प्रभावित न हो।

अध्ययन से प्राप्त परिणाम एन. सी. टी. ई., एन. सी. ई. आर. टी. और एस. सी. ई. आर. टी. के द्वारा संचालित शिक्षक शिक्षा एवं उनके कौशल विकास के लिए दिए जाने वाले प्रशिक्षण की रूप रेखा तैयार करने में मददगार सिध्द होंगे ।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची-

- Adhikari, G. S., (1998). Comprehensive Study Of Emotional Maturity, University Students & Teacher. Psychological Abstracts Vol. 9, 65-66.
- Kaur, Harmandeep, (2019) .Emotional Maturity as a Predictor of Mental Health of Prospective Teachers, Panjab University,Chandigarh.

- Kaur, Harmeet & Ray, Komal (2017). Impact of Emotional Maturity on Stress, Adjustment and Self Confidence of Young Adults.
- Mangal S.K. & Shubhra,Mangal (2014).Research Methodology in Behavioural Sciences, P.S.I. Learning Pt.L.
- Mangal, S.K. (2009). Fundamentals of Educational Research & Statistics, R, Lall Book Dipot, Merath.
- Malik, Umendra, (2014).Teaching of School Teacher in Relation Emotional Maturity, 2(3),1-9. http://hdl.handle.net/10603/9577.
- Ratan, Sandeep, (2016). A Case Study on Emotional Maturity Level of B.Ed.Student Teacher of Kohima District, vol 5(4), p-ISSN 2349-5138.
- Rawat Chanda, Singh Ritu. A Study of Emotinal Maturity of Adolescents with Respect to their Educational Setting, Journals of Social Science 49(3-2),345-351,2016.
- Sharma R. A., (2017). Fundamentals of Educational Research & Statistics, R. Lall Book Dipot, Merath.
- S John & Mano, Raj (2017) .A Study on Relationship Between Emotional Maturity, Stress and Self Confidence Among Management Student, vol1(5) ISSN 2320-5504.
- S. Haseena, (2013).Impact of Emotional Maturity And Self Efficiency on a Academic Stress and Coping Resource of Junior college Student, Tirupati 2013.tandfonlinc.com
- Sarah,Jenkins & Hazal, Conly, (2007). Living with the Contradiction d Modernization? Emotional Management in the Teaching Professional Public Administratio, Vol85(4), 979-1001.
- Vig, Deepak & Setthi, Lata (2017). Association between Emotional Maturity and Perceived Stress Among Adolescents, vol 12(1), 188-192